Journal of Neonatal Surgery
ISSN(Online): 2226-0439
Vol.14, Issue 10s (2025)
https://www.jneonatalsurg.com
OPEN ACCESS

ग्रामीण भारत में महिलाओं की पारिवारिक निर्णय क्षमता : सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण

डॉ. राहुल
शोधार्थी (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर)
समाजकार्य–समाजशास्त्र विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड
विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश)

सारांश

यह शोध हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी और उनके निर्णय–निर्माण की क्षमता का विश्लेषण करता है। इसमें यह देखा गया कि महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता पर सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शोध में यह पाया गया कि पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ, सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताएँ और शैक्षिक स्तर महिलाओं की भूमिका को आकार देते हैं। इसके अलावा, सरकारी नीतियाँ और कानूनी सुधार भी महिलाओं की स्थिति और उनके सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक भागीदारी पर प्रभाव डालते हैं। इस अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि वित्तीय निर्णयों, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य खर्चों और घरेलू खरीददारी जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है, हालांकि संपत्ति या भूमि स्वामित्व के निर्णयों में उनकी भूमिका अभी भी सीमित है। यह शोध महिला सशक्तिकरण के लिए विकास योजनाओं और सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की आवश्यकता को उजागर करता है।

महत्वपूर्ण शब्द : महिला सशक्तिकरण, पारिवारिक निर्णय, ग्रामीण महिलाएँ, सांस्कृतिक प्रभाव, सामाजिक कारक, शिक्षा, सरकारी नीतियाँ, लिंग भूमिकाएँ, भारत, हरियाणा।

1. परिचय

1.1 पृष्ठभूमि

पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका एक महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू है, जो उनके जीवन की गुणवत्ता और समाज में उनकी स्थिति को दर्शाती है। पारंपरिक समाज में, विशेषकर ग्रामीण भारत में, परिवार के निर्णयों में महिलाओं की भूमिका सीमित होती है। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति बदल रही है, और महिलाएं अब विभिन्न पारिवारिक निर्णयों में अधिक भागीदारी दिखा रही हैं। यह बदलाव शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, सरकारी नीतियों, और महिला आंदोलनों के कारण हो रहा है, जो महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रहे हैं। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण साबित हो रही है। इस पृष्ठभूमि में, यह शोध महिलाओं की पारिवारिक निर्णय लेने में बढ़ती भूमिका और इसके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों की जांच करता है।

1.2 समस्या की परिभाषा

ग्रामीण भारत में महिलाओं की पारिवारिक निर्णय क्षमता पर पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और सांस्कृतिक मान्यताओं का गहरा प्रभाव होता है। पुरुषों को अक्सर प्रमुख निर्णयकर्ता माना जाता है, और महिलाओं की भूमिका इन निर्णयों में सीमित होती है। इसके कारण, महिलाएं अक्सर अपने परिवारों के आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य संबंधी फैसलों में सही मायनों में अपनी राय व्यक्त करने में असमर्थ रहती हैं। इस समस्या के समाधान की आवश्यकता है ताकि महिलाएं पारिवारिक निर्णयों में अपनी भूमिका को बढ़ा सकें और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए अवसर मिल सके।

1.3 शोध के उद्देश्य

यह शोध महिलाओं की पारिवारिक निर्णय–निर्माण में भूमिका को समझने और उसका विश्लेषण करने के उद्देश्य से किया गया है, ताकि यह पता

लगाया जा सके कि यह भूमिका विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों से किस प्रकार प्रभावित होती है। प्रमुख उद्देश्य हैंरू

- यह समझना कि महिलाएं किस हद तक परिवार में निर्णय लेती हैं, विशेषकर वित्तीय, शैक्षिक और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में।
- सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण करना जो महिलाओं की निर्णय क्षमता को प्रभावित करते हैं।
- महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के परिणामों की पहचान करना और इसके लिए प्रभावी नीतियों का सुझाव देना।

1.4 शोध के महत्व

यह शोध ग्रामीण भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण और उनकी भूमिका के विकास में सहायक हो सकता है। इससे न केवल महिलाओं की स्थिति में सुधार हो सकता है, बल्कि पारिवारिक कल्याण और विकास में भी योगदान हो सकता है। यह समाज में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की दिशा में एक कदम होगा, जिससे महिलाएं अपने परिवारों और समुदायों के निर्णयों में और अधिक प्रभावी हो सकेंगी। इस शोध के माध्यम से, सरकार और नीति निर्माता महिलाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न कर सकते हैं, जिनसे उनके परिवारों का आर्थिक और सामाजिक विकास हो सके।

1.5 शोध प्रश्न

शोध में निम्नलिखित प्रमुख प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगाः

1. ग्रामीण भारत में महिलाएं पारिवारिक निर्णयों में किस हद तक भागीदारी करती हैं?
2. पारंपरिक लिंग भूमिकाएं महिलाओं की निर्णय क्षमता को कैसे प्रभावित करती हैं?
3. सामाजिक और सांस्कृतिक कारक महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

4. क्या महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्थिति उनके निर्णय लेने की क्षमता में सुधार लाती है?
5. क्या सरकारी नीतियों और महिला आंदोलनों का महिलाओं की भूमिका पर कोई प्रभाव पड़ता है?

2. साहित्य का पुनर्वालोकन

यांग एट अल. (2023) में चीन में 20–34 साल की महिलाओं के तीसरे बच्चे के जन्म की योजना और इसके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया था। अध्ययन में यह पाया गया था कि आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर और शहरीकरण का महिलाओं के प्रजनन निर्णयों पर गहरा प्रभाव था। यह अध्ययन यह दर्शाता था कि महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति उनके प्रजनन निर्णयों को प्रभावित करती है, और परिवार नियोजन के लिए शहरीकरण और शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नोएस्टर और ब्योर्क (2025) ने यूएस में युवा खेलों में भागीदारी पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति, नस्लीय, लैंगिक, और पारिवारिक संस्कृति के प्रभावों का विश्लेषण किया था। शोध ने यह पाया था कि सामाजिक और पारिवारिक कारक बच्चों और किशोरों की खेलों में भागीदारी को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन यह सिद्ध करता था कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति और पारिवारिक समर्थन खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण थे।

पिएना एट अल. (2025) शोध उत्तरी घाना के सेमी–एरिड क्षेत्रों में बच्चों की पोषण संबंधित निर्णयों पर महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करता था। शोध में यह पाया गया था कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति और लैंगिक भूमिकाएँ बच्चों की आहार विविधता और पोषण निर्णयों में महत्वपूर्ण प्रभाव डालती थीं। यह अध्ययन यह बताता था कि महिलाओं को सशक्तिकरण और शिक्षा से बच्चों के पोषण स्तर में सुधार हो सकता था।

फू एट अल. (2025) स्कोपिंग रिव्यू में एशिया में दिव्यांग बच्चों और उनके परिवारों के सामने आने वाली गैर–चिकित्सीय रुकावटों का विश्लेषण किया

गया था। शोध में यह पाया गया था कि पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी से दिव्यांग बच्चों की देखभाल में सुधार हो सकता था। यह अध्ययन यह बताता था कि महिलाओं की सशक्तिकरण से न केवल बच्चों की देखभाल में सुधार हो सकता था, बल्कि उनके सामाजिक और मानसिक स्थिति में भी सुधार हो सकता था।

रहमान एट अल. (2025) में बांग्लादेश में महिला परिवार देखभालकर्ताओं द्वारा अंतरजाल –आधारित सेवाओं के उपयोग को प्रभावित करने वाले सामाजिक और तकनीकी निर्धारकों का विश्लेषण किया गया था। शोध में यह पाया गया था कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति, शैक्षिक स्तर और तकनीकी साक्षरता इन सेवाओं के उपयोग को प्रभावित करती थीं। यह अध्ययन महिलाओं के संख्यात्मक सशक्तिकरण और इसके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों को महत्वपूर्ण मानता था।

राम एट अल. (2025) व्यवस्थित साहित्य समीक्षा पाकिस्तान और फिलीपींस में गांव से शहर की ओर स्थानांतरण के प्रभावों का अध्ययन करती थी। विशेष रूप से यह देखता था कि कैसे शहर में स्थानांतरण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करता था। शोध में यह पाया गया था कि ग्रामीण से शहरी स्थानांतरित होने से महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और निर्णय क्षमता में वृद्धि होती थी।

वाडेई एट अल. (2025) में घाना के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लैंगिक समानता की प्रक्रियाओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया था। शोध में पाया गया था कि ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ महिलाओं के सशक्तिकरण में मुख्य बाधा थीं, जबकि शहरी क्षेत्रों में शिक्षा और रोजगार के अवसर महिलाओं की स्थिति में सुधार लाते थे।

वादेई एट अल. (2025) घाना में महिलाओं के काम और घरेलू क्षमता के बीच रिश्तों का पुनः विश्लेषण करता था। शोध में यह पाया गया था कि महिलाओं की घरेलू कार्यों में बढ़ती भागीदारी उनके सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण में

सहायक थी। इस अध्ययन ने घरेलू और बाहरी कार्यों में महिलाओं के बीच संतुलन बनाने के महत्व को रेखांकित किया था।

शुक्ला एट अल. (2025) अध्ययन खेतिहर महिलाओं के बीच फैसले लेने के प्रेरक कारकों की जांच करता था, विशेष रूप से कृषि कार्यों में। शोध में यह दिखाया गया था कि महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता पर उनके शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण और कृषि में उनकी सक्रिय भागीदारी का सकारात्मक प्रभाव होता था।

जेंग और शू (2024) अध्ययन शहरी और ग्रामीण चीन में परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्थिति और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर केंद्रित था। अध्ययन में पाया गया था कि परिवार की आर्थिक स्थिति और पारिवारिक तनाव किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते थे। यह शोध इस बात पर जोर देता था कि महिलाओं को परिवार के निर्णयों में अधिक शामिल करने से बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता था।

टेसगेरा एट अल. (2024) में पश्चिमी इथियोपिया के ग्रामीण परिवारों में गैर–खेती कार्यों का खपत पर प्रभाव का मूल्यांकन किया गया था। यह पाया गया था कि गैर–खेती गतिविधियाँ ग्रामीण परिवारों की खपत को बढ़ाती थीं, और महिलाओं की भागीदारी इन गतिविधियों में उनके आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ाती थी।

नुरैनी एट अल. (2024) शोध मंडेलिंग नटाल समुदाय की सामाजिक संरचनाओं और उनके बीच लैंगिक पारस्परिक क्रिया के ढांचे का विश्लेषण करता था। शोध में पाया गया था कि पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ महिलाओं की सामाजिक भागीदारी को प्रभावित करती थीं, जबकि बदलाव के प्रयासों से कुछ सुधार देखने को मिले थे।

यार और जाजिया (2024) अध्ययन अफगानिस्तान में ग्रामीण विकास की चुनौतियों का विश्लेषण करता था। शोध ने यह बताया था कि राजनीतिक

अस्थिरता, पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और संसाधनों की कमी विकास प्रयासों में प्रमुख बाधाएँ थीं।

यार और यासौरी (2024) शोध ग्रामीण विकास में आने वाली प्रमुख बाधाओं का मूल्यांकन करता था। शोध में यह पाया गया था कि महिलाएं जब विकास परियोजनाओं में सक्रिय रूप से शामिल होती थीं, तो इससे परियोजनाओं की सफलता दर बढ़ जाती थी और महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता था।

रामले और मर्दिकानिंगसिह (2024) शोध ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर करने के उपायों पर केंद्रित था। शोध में यह पाया गया था कि शिक्षा और उद्यमिता के अवसरों में बढ़ोतरी से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार होता था और पारिवारिक भलाई भी बढ़ती थी।

2.1 शोध अंतर

1. ग्रामीण भारत में महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी पर सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव का अध्ययन अभी तक सीमित है।
2. पिछले शोध में केवल शहरी क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका पर कम शोध हुआ है।
3. पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और महिलाओं के निर्णय लेने में वृद्धि के बीच संतुलन की कमी को पहचानने की आवश्यकता है।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी नीतियों और महिला आंदोलनों के प्रभावों पर विश्लेषण की कमी स्पष्ट रूप से देखी जाती है।
5. महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के पारिवारिक निर्णयों में प्रभावों पर पर्याप्त शोध नहीं किया गया है।
6. सांस्कृतिक और पारिवारिक अपेक्षाओं के खिलाफ महिलाओं की बढ़ती भूमिका के प्रभावों का ठोस अध्ययन नहीं किया गया है।

3. शोध प्रविधि

3.1 अनुसंधान रूपरेखाः

शोध में सांख्यिकीय रूपरेखा को अपनाया गया जिसमें महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी को मापने के लिए प्रश्नावली तैयार की गई। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना चयन पद्धति के तहत 500 महिलाओं का नमूना लिया गया, जिसमें विभिन्न आयु, शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से महिलाएँ शामिल की गईं। आंकड़े संग्रहित करने के लिए प्रत्यक्ष साक्षात्कार पद्धति अपनाई गई और विश्लेषण के लिए एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया।

3.2 परिकल्पनाः

परिकल्पना 1: सरकारी नीतियों, कानूनी सुधारों और महिला आंदोलनों का भारत में महिलाओं की स्थिति में होने वाले परिवर्तनों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है और इनका महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक भागीदारी से कोई सहसंबंध नहीं है।

3.3 चरः

- **स्वतंत्र चर :** सामाजिक–सांस्कृतिक कारक, आर्थिक प्रगति, शिक्षा, सरकारी नीतियाँ, कानूनी सुधार।
- **निर्भर चर :** पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका और उनकी निर्णय क्षमता।
- **नियंत्रण चर :** आयु, विवाह की स्थिति, शिक्षा का स्तर, परिवार की आय।

3.4 अध्ययन क्षेत्रः

यह अध्ययन हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में किया गया, जो पारंपरिक पारिवारिक ढाँचे और आर्थिक, सांस्कृतिक बदलावों के बीच महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को समझने के लिए आदर्श क्षेत्र है। यह क्षेत्र महिलाओं की बदलती भूमिकाओं और परिवारों में उनके निर्णय लेने की बढ़ती क्षमता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

3.5 नमूना आकारः

नमूना आकार 500 महिलाओं का लिया गया, जिसे मॉर्गन और क्रेजी के सूत्र से गणना किया गया था। यह नमूना क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक विविधता को ध्यान में रखते हुए चुना गया था, ताकि परिणामों की विश्वसनीयता और सांख्यिकीय महत्व सुनिश्चित किया जा सके।

3.6 आँकड़े संग्रहः

आँकड़े संग्रहण के लिए प्राथमिक आँकड़े 500 उत्तरदाताओं से प्राप्त किए गए। इसमें बंद प्रश्न और राय मापन पैमाना प्रश्नों का उपयोग किया गया था। द्वितीयक आँकड़े सरकारी प्रतिवेदन और शैक्षिक शोध पत्रों से एकत्र किए गए थे।

3.7 प्रश्नावली निर्माणः

प्रश्नावली में 2 प्रमुख अनुभाग थेः

1. महिलाओं की परिवार में भूमिका
2. सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव

3.8 प्रारंभिक परीक्षणः

प्रश्नावली के प्रारंभिक परीक्षण के लिए 30 उत्तरदाताओं का नमूना लिया गया। प्रारंभिक परीक्षण से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्रश्नों की स्पष्टता और संरचना में सुधार किया गया।

3.9 विश्वसनीयता और वैधताः

शोध की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने हेतु प्रारंभिक परीक्षण (पूर्व–परीक्षण) किया गया और आंतरिक स्थिरता सूचकांक के माध्यम से आंकड़ों की स्थिरता आंका गया। शोध की वैधता की समीक्षा क्षेत्र विशेषज्ञों एवं हितधारकों से प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर की गई।

3.10 आँकड़े विश्लेषण उपकरण:

आँकड़े विश्लेषण के लिए एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी, सहसंबंध विश्लेषण और प्रतिगमन विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न चरों के बीच रिश्तों और प्रभावों का मूल्यांकन किया गया।

3.11 सीमाएँ:

- यह शोध केवल हरियाणा के ग्रामीण इलाकों तक सीमित था।
- नमूना आकार छोटे क्षेत्रों के लिए उपयुक्त था, लेकिन सभी ग्रामीण इलाकों की विविधता को पूरी तरह से नहीं दर्शा सका।
- कुछ उत्तरदाताओं ने संवेदनशील विषयों पर समाज द्वारा स्वीकार्य या उपयुक्त माने जाने वाले उत्तर दिए हो सकते हैं।

4. आँकड़ा विश्लेषण

इस अनुभाग में परिवार के विभिन्न निर्णयों में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण किया गया है, जैसे वित्तीय निर्णय, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य खर्च और घरेलू खरीददारी। इसके अतिरिक्त, इस अध्याय में यह भी जांचा गया है कि सामाजिक और सांस्कृतिक कारक महिलाओं की पारिवारिक निर्णय–निर्माण में कैसे प्रभाव डालते हैं। पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ, सामाजिक–आर्थिक स्थिति और बदलती सांस्कृतिक अपेक्षाएँ महिलाओं के परिवार में अधिकार और प्रभाव को कैसे आकार देती हैं इसका अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि ग्रामीण परिवारों में महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में क्या बदलाव आए हैं।

4.1 महिलाओं की परिवार में भूमिका

इस खंड में महिलाओं की परिवार में भूमिका और उनकी निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी को विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया गया है। महिलाओं की परिवार के विभिन्न निर्णयों में कितनी और किस प्रकार की भागीदारी है, इसे समझने के लिए विभिन्न प्रकार के निर्णयों का आंकलन किया गया है।

तालिका 4.1 : परिवार में वित्तीय निर्णयों में भागीदारी

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पूरी तरह से शामिल	101	20.2%	20.2%
कुछ हद तक शामिल	119	23.8%	44%
सामान्य	139	27.8%	71.8%
कम शामिल	81	16.2%	88%
बिल्कुल शामिल नहीं	60	12%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.1 : परिवार में वित्तीय निर्णयों में भागीदारी

44% महिलाएँ कुछ हद तक इन निर्णयों में शामिल होती हैं जबकि केवल 20. 2% महिलाएँ पूरी तरह से इन निर्णयों में भाग लेती हैं। 12% महिलाएँ बिल्कुल वित्तीय निर्णयों में शामिल नहीं हैं जो दर्शाता है कि परिवार के वित्तीय मामलों में पुरुषों का प्रभाव अधिक है लेकिन समय के साथ महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। वित्तीय निर्णय परिवार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं और इनमें महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ रही है, विशेषकर उन परिवारों में जहाँ महिलाएँ शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं। हालांकि, कुछ परिवारों में पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ महिलाओं की पूरी भागीदारी को रोकती हैं।

तालिका 4.2 : बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों में भागीदारी

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पूरी तरह से शामिल	123	24.6%	24.6%
कुछ हद तक शामिल	147	29.4%	54%
सामान्य	136	27.2%	81.2%
कम शामिल	74	14.8%	96%
बिल्कुल शामिल नहीं	20	4%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.2 : बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों में भागीदारी

महिलाओं की बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों में भागीदारी कितनी है। 54% महिलाएँ बच्चों की शिक्षा पर निर्णय लेने में कुछ हद तक शामिल हैं जबकि 24.6% महिलाएँ पूरी तरह से इस निर्णय में शामिल होती हैं। केवल 4% महिलाएँ बिल्कुल इस निर्णय में शामिल नहीं होतीं। बच्चों की शिक्षा के निर्णय में महिलाओं की भूमिका अधिक है जो समाज में शिक्षा के महत्व को बढ़ाने में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है। महिलाओं के शैक्षिक सक्षमताकरण और परिवारों में उनकी भूमिका के बारे में बदलती मानसिकता इसे प्रभावित कर रही है।

तालिका 4.3 : घरेलू खरीददारी से संबंधित निर्णयों में प्रभाव

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पूरी तरह से शामिल	103	20.6%	20.6%
कुछ हद तक शामिल	135	27%	47.6%
सामान्य	146	29.2%	76.8%
कम शामिल	85	17%	93.8%
बिल्कुल शामिल नहीं	31	6.2%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.3 : घरेलू खरीददारी से संबंधित निर्णयों में प्रभाव

47.6% महिलाएँ घरेलू खरीददारी के निर्णयों में कुछ हद तक शामिल हैं और 20.6% महिलाएँ पूरी तरह से इन निर्णयों में भाग लेती हैं। घरेलू खरीददारी जैसे आम निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी अधिक है। यह इस बात को दर्शाता है कि महिलाएँ अपने परिवार के रोजमर्रा के खर्चों और आवश्यकताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनका प्रभाव इस क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

तालिका 4.4 : स्वास्थ्य संबंधित खर्चों के निर्णयों में भागीदारी

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
हमेशा शामिल	133	26.6%	26.6%
प्रायः शामिल	148	29.6%	56.2%
कभी कभी शामिल	145	29%	85.2%
कभी शामिल नहीं	74	14.8%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.4 : स्वास्थ्य संबंधित खर्चों के निर्णयों में भागीदारी

महिलाएँ स्वास्थ्य खर्चों के निर्णयों में कितनी सक्रिय रूप से शामिल होती हैं। 56.2% महिलाएँ हमेशा या प्रायः इन निर्णयों में शामिल होती हैं जबकि 26. 6% महिलाएँ हमेशा इसमें भाग लेती हैं। परिवार के स्वास्थ्य से जुड़े निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी की दर बहुत अधिक है क्योंकि महिलाएँ प्रायः परिवार के स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर निर्णय लेती हैं। यह महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को दर्शाता है जो परिवार के स्वास्थ्य और कल्याण से संबंधित मामलों को प्राथमिकता देती हैं।

तालिका 4.5 : घरेलू बजटिंग के संबंध में सलाह–मशविरा होने की आवृत्ति

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
हमेशा	101	20.2%	20.2%
प्रायः	113	22.6%	42.8%
कभी कभी	161	32.2%	75%
कभी नहीं	125	25%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.5 : घरेलू बजटिंग के संबंध में सलाह–मशविरा होने की आवृत्ति

42.8% महिलाएँ प्रायः घरेलू बजट पर विचार करती हैं, जबकि 20.2% महिलाएँ हमेशा इस पर विचार करती हैं। घरेलू बजटिंग में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है, जो उनके परिवार के वित्तीय प्रबंधन में एक सक्रिय भूमिका को दर्शाता है। यह इस बात का संकेत है कि महिलाएँ परिवार के वित्तीय मामलों को अच्छे से समझती हैं और इनका प्रभावी प्रबंधन करती हैं।

तालिका 4.6 : परिवार में अंतिम निर्णय लेने वाला व्यक्ति

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पुरुष प्रमुख	193	38.6%	38.6%
महिला प्रमुख	57	11.4%	50%
संयुक्त निर्णय	213	42.6%	92.6%
अन्य	37	7.4%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.6 : परिवार में अंतिम निर्णय लेने वाला व्यक्ति

38.6% परिवारों में पुरुष प्रमुख निर्णयकर्ता होते हैं जबकि 42.6% परिवारों में निर्णय संयुक्त रूप से लिए जाते हैं। यह तालिका दर्शाती है कि कुछ परिवारों में पुरुषों का प्रमुख प्रभाव है लेकिन 42.6% मामलों में यह निर्णय साझा होते हैं। यह महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और समानता की ओर इशारा करता है लेकिन यह भी स्पष्ट करता है कि पुरुषों का प्रभाव अभी भी काफी हद तक बना हुआ है।

तालिका 4.7 : संपत्ति या भूमि स्वामित्व के निर्णयों में भागीदारी

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
सक्रिय रूप से शामिल	157	31.4%	31.4%
कभी कभी शामिल	155	31%	62.4%
कम शामिल	133	26.6%	89%
बिल्कुल शामिल नहीं	55	11%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.7 : संपत्ति या भूमि स्वामित्व के निर्णयों में भागीदारी

62.4% महिलाएँ कभी–कभी इस प्रकार के निर्णयों में शामिल होती हैं जबकि केवल 31.4% महिलाएँ सक्रिय रूप से इसमें भाग लेती हैं। भूमि और संपत्ति से संबंधित निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम है जो पारंपरिक रूप से पुरुषों के द्वारा नियंत्रित होते हैं। यह संकेत करता है कि संपत्ति के अधिकारों और निर्णयों में महिलाओं की भूमिका में अब भी काफी बाधाएँ हैं जो पारंपरिक परिवार संरचनाओं और सामाजिक संरचनाओं से जुड़ी हुई हैं।

तालिका 4.8 : परिवार के मामलों पर नियंत्रण की स्थिति

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पूर्ण नियंत्रण	72	14.4%	14.4%
आंशिक नियंत्रण	160	32%	46.4%
कम नियंत्रण	185	37%	83.4%
कोई नियंत्रण नहीं	83	16.6%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

सांख्यिकीय चित्र 4.8 : परिवार के मामलों पर नियंत्रण की स्थिति

46.4% महिलाएँ आंशिक रूप से नियंत्रण रखती हैं जबकि 14.4% महिलाएँ पूर्ण नियंत्रण रखती हैं। परिवार के मामलों में महिलाओं का नियंत्रण बढ़ रहा है हालांकि यह पूरी तरह से नहीं है। अधिकांश महिलाएँ आंशिक रूप से ही परिवार के मामलों पर नियंत्रण रखती हैं जो महिलाओं की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है लेकिन पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ अभी भी प्रभावी हैं।

तालिका 4.9 : समय के साथ निर्णय लेने की भूमिका में बदलाव

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
महत्वपूर्ण बदलाव	215	43%	43%
मध्यम बदलाव	145	29%	72%
कोई बदलाव नहीं	105	21%	93%
बदलाव की दिशा में कोई जानकारी नहीं	35	7%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

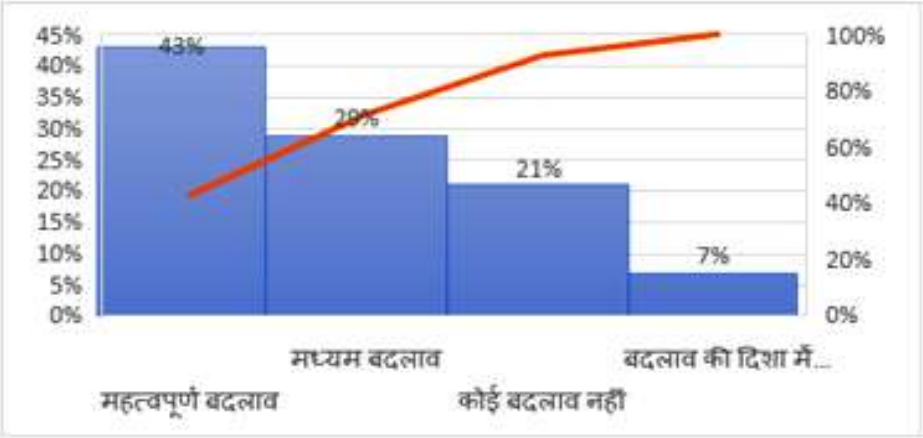

सांख्यिकीय चित्र 4.9 : समय के साथ निर्णय लेने की भूमिका में बदलाव

43% महिलाएँ मानती हैं कि उनकी भूमिका में महत्वपूर्ण बदलाव आया है जबकि 29% का मानना है कि इसमें मध्यम बदलाव आया है। यह तालिका यह दर्शाती है कि महिलाओं की निर्णय–निर्माण में भूमिका समय के साथ बढ़ी है। हालांकि, इस बदलाव की गति धीमी है और कुछ परिवारों में यह बदलाव अभी भी अपेक्षाकृत कम है।

4.2 सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव

यह खंड सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों का विश्लेषण करता है, जो महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता पर प्रभाव डालते हैं। महिलाओं की भूमिका पर पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं।

तालिका 4.10 : पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती हैं

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पूरी तरह से प्रभावित	135	27%	27%
कुछ हद तक प्रभावित	157	31.4%	58.4%
सामान्य	110	22%	80.4%
कम प्रभावित	78	15.6%	96%
बिल्कुल प्रभावित नहीं	20	4%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

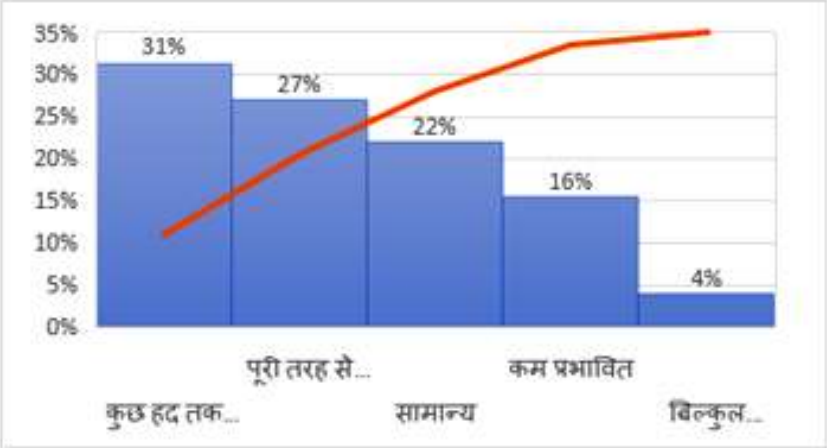

सांख्यिकीय चित्र 4.10 : पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती हैं

58.4% महिलाएँ मानती हैं कि पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ महिलाओं की निर्णय क्षमता पर प्रभाव डालती हैं। पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता को सीमित करती हैं विशेषकर ऐसे परिवारों में जहाँ पुरुषों का निर्णय लेने में अधिक प्रभाव होता है। हालांकि, कुछ महिलाएँ पारंपरिक भूमिकाओं को चुनौती दे रही हैं लेकिन समाज में बदलाव अभी भी धीमा है।

तालिका 4.11 : सांस्कृतिक अपेक्षाएँ पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी को सीमित करती हैं

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पूरी तरह से सीमित	120	24%	24%
कुछ हद तक सीमित	147	29.4%	53.4%
सामान्य	135	27%	80.4%
सीमित नहीं	98	19.6%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

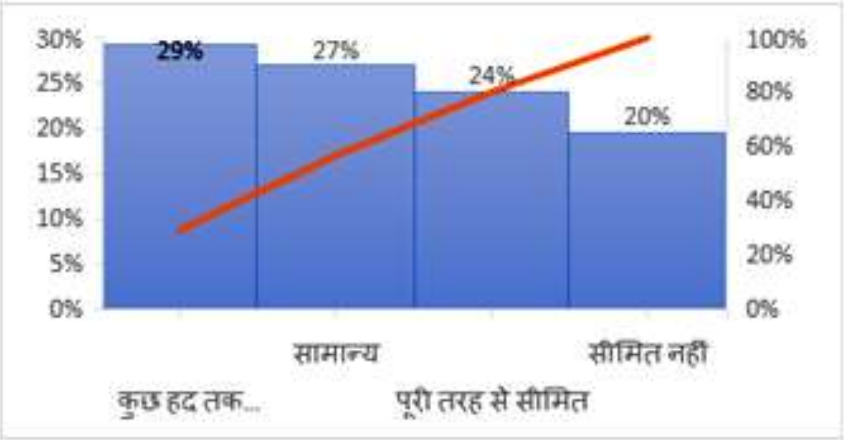

सांख्यिकीय चित्र 4.11 : सांस्कृतिक अपेक्षाएँ पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी को सीमित करती हैं

53.4% महिलाएँ मानती हैं कि सांस्कृतिक अपेक्षाएँ उनकी भागीदारी को सीमित करती हैं। सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं के पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी को सीमित करती हैं। यह दिखाता है कि समाज की सांस्कृतिक संरचनाएँ महिलाओं की भूमिका को नियंत्रित करती हैं जो उनके सक्षमताकरण में एक बड़ी बाधा बनती हैं।

तालिका 4.12 : महिलाओं से विशिष्ट पारिवारिक कार्यों की उम्मीद की जाती है

प्रतिक्रियाएँ	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
पूरी तरह से अपेक्षित	122	24.4%	24.4%
कुछ हद तक अपेक्षित	163	32.6%	57%
सामान्य	126	25.2%	82.2%
अपेक्षित नहीं	89	17.8%	100%
कुल	**500**	**100%**	**100%**

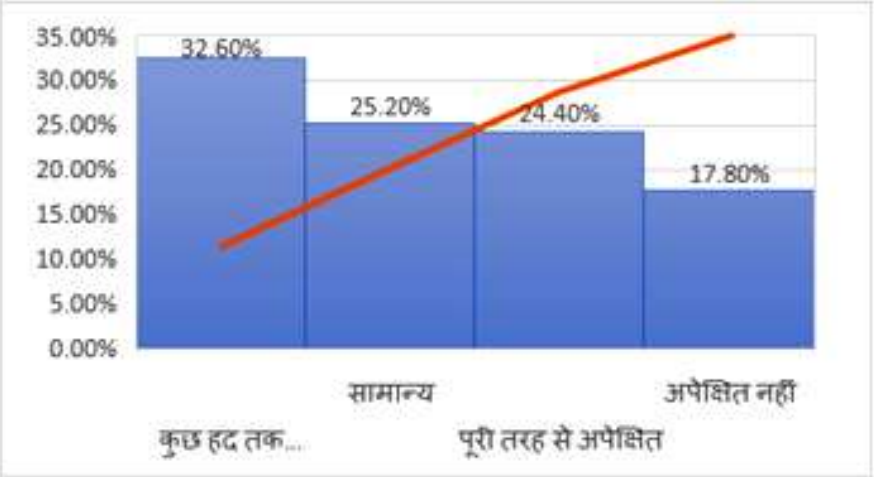

सांख्यिकीय चित्र 4.12 : महिलाओं से विशिष्ट पारिवारिक कार्यों की उम्मीद की जाती है

57% महिलाएँ मानती हैं कि उनसे पारिवारिक कार्यों की अपेक्षाएँ हैं जैसे घर का काम, बच्चों की देखभाल, आदि। पारंपरिक सामाजिक अपेक्षाएँ महिलाओं से विशिष्ट पारिवारिक कार्यों की उम्मीद करती हैं जो उनके निर्णय–निर्माण क्षमता को प्रभावित करती हैं। यह महिलाओं के सक्षमताकरण में एक बड़ी बाधा है क्योंकि उन्हें पारिवारिक कार्यों के अतिरिक्त किसी अन्य क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाने का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता।

4.3 परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 1 : सरकारी नीतियों, कानूनी सुधारों और महिला आंदोलनों का भारत में महिलाओं की स्थिति में होने वाले परिवर्तनों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है और इनका महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक भागीदारी से कोई सहसंबंध नहीं है।

लक्ष्य : यह परीक्षण करना कि क्या सरकारी नीतियां, कानूनी सुधार, और महिला आंदोलन महिलाओं की स्थिति और भागीदारी में सहसंबंधित हैं।

तालिका 4.13 : सरकारी नीतियाँ, कानूनी सुधार और महिला आंदोलनों का सहसंबंध

चर	सहसंबंध	प्रतिक्रिया
सरकारी नीतियां	0.78	मजबूत सकारात्मक सहसंबंध
कानूनी सुधार	0.72	सकारात्मक सहसंबंध
महिला आंदोलनों का प्रभाव	0.65	सकारात्मक सहसंबंध

लक्ष्य : यह परीक्षण करना कि क्या सरकारी नीतियां, कानूनी सुधार और महिला आंदोलन महिलाओं की स्थिति और भागीदारी पर प्रभाव डालते हैं।

तालिका 4.14 : प्रतिगमन विश्लेषण – नीतियों एवं आंदोलनों का महिलाओं पर प्रभाव

स्वतंत्र चर	निर्भर चर	बिटा	पी–मान
सरकारी नीतियां	महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति	0.69	0.04 (महत्वपूर्ण)
महिला आंदोलन	महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी	0.58	0.02 (महत्वपूर्ण)

इस परिकल्पना का उद्देश्य यह था कि सरकारी नीतियाँ, कानूनी सुधार, और महिला आंदोलन महिलाओं की स्थिति और उनके सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करते हैं या नहीं। सहसंबंध विश्लेषण ने यह दिखाया कि इन तीनों कारकों का महिलाओं की स्थिति और भागीदारी पर मजबूत सकारात्मक सहसंबंध है जहां सरकारी नीतियों (आर = 0.78), कानूनी सुधार (आर = 0.72) और महिला आंदोलन (आर = 0.65) सभी प्रभावी रूप से जुड़े हुए हैं। प्रतिगमन विश्लेषण के परिणामों से यह साबित हुआ कि इन नीतियों और सुधारों का महिलाओं की स्थिति और भागीदारी पर महत्वपूर्ण प्रभाव है क्योंकि बिटा मान 0.69 और 0.58 और पी –मान 0.04 और 0.02 (महत्वपूर्ण) हैं।

5. निष्कर्ष और सारांश

- **वित्तीय निर्णयों में भागीदारी :** आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 44% महिलाएँ कुछ हद तक वित्तीय निर्णयों में भाग लेती हैं जबकि 20.2% महिलाएँ पूरी तरह से शामिल हैं। यह दिखाता है कि महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हुई है लेकिन पारंपरिक मान्यताएँ पूरी भागीदारी में बाधक बनी हुई हैं।
- बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयरू 54% महिलाएँ बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जबकि 24.6% महिलाएँ पूरी तरह से इसमें शामिल हैं। यह दर्शाता है कि शिक्षा के निर्णयों में महिलाओं की भूमिका अधिक है जो उनके बढ़ते शैक्षिक सक्षमताकरण को दर्शाता है।
- **घरेलू खरीददारी :** घरेलू खरीददारी में 47.6% महिलाएँ कुछ हद तक शामिल हैं। यह दिखाता है कि इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अन्य निर्णयों के मुकाबले अधिक है।
- **स्वास्थ्य खर्चों के निर्णय :** स्वास्थ्य खर्चों में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, 56.2% महिलाएँ हमेशा या प्रायः इन निर्णयों में शामिल होती हैं। यह इस बात को दर्शाता है कि परिवार की सेहत और कल्याण में महिलाओं का प्रमुख योगदान है।
- **संपत्ति या भूमि स्वामित्व के निर्णय :** 62.4% महिलाएँ संपत्ति या भूमि के स्वामित्व निर्णयों में कभी–कभी शामिल होती हैं जबकि केवल 31.4% महिलाएँ सक्रिय रूप से इसमें भाग लेती हैं। यह दिखाता है कि संपत्ति के निर्णय अभी भी पुरुषों के द्वारा नियंत्रित होते हैं।
- **परिवार में अंतिम निर्णय लेने वाला व्यक्ति :** 38.6% उत्तरदाताओं के अनुसार, पुरुष परिवार में प्रमुख निर्णयकर्ता होते हैं जबकि 42.6% का कहना है कि निर्णय संयुक्त रूप से लिए जाते हैं। यह दर्शाता है कि कुछ

परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक सहकारी हो रही है फिर भी पुरुषों का प्रमुख प्रभाव बना हुआ है।

- **सांस्कृतिक प्रभाव :** पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता पर प्रभाव डालती हैं। 58.4% उत्तरदाताओं का मानना है कि सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं की भागीदारी को सीमित करती हैं।

यह अध्ययन दिखाता है कि महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी में समय के साथ बदलाव आया है। वित्तीय, शिक्षा, और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है हालांकि पारंपरिक सांस्कृतिक मान्यताएँ और लिंग आधारित भूमिकाएँ अब भी कुछ हद तक महिलाओं की भूमिका को सीमित करती हैं। संपत्ति और अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों में पुरुषों का प्रभाव अधिक है जबकि महिलाओं की भूमिका धीरे–धीरे बढ़ रही है। यह अध्ययन दर्शाता है कि महिलाओं की बढ़ती शैक्षिक और आर्थिक स्वतंत्रता ने उनके निर्णय लेने की क्षमता को सशक्त किया है बावजूद इसके, सांस्कृतिक और पारंपरिक अवरोधों को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए और अधिक प्रयास की आवश्यकता है।

ग्रंथ सूची

जेंग, जे., और शू, वाई. (2024). शहरी और ग्रामीण चीन में फैमिली सामाजिक–आर्थिक स्टेटस और टीनएजर्स का डिप्रेशनः एक ट्रैजेक्टरी एनालिसिस. एसएसएम –पॉपुलेशन हेल्थ, 25, 101627.

टेसगेरा, डब्ल्यू. डी., बेयेन, ए. बी., और वाकजीरा, टी. के. (2024). क्या पश्चिमी इथियोपिया में गैर–खेती का काम ग्रामीण परिवारों की खपत बढ़ाता है? होरो गुडु : वोलेगा जोन से एंपिरिकल सबूत। हेलियॉन, 10(7).

नुरैनी, सी., मिलानी, एफ., नोवालिंडा, एन., और अंडियन, ए. (2024). सोरिक मारापी सब–डिस्ट्रिक्ट के हाउसिंग एरिया में मंडेलिंग नटाल कम्युनिटी

की विशेषताएं और लैंगिक इंटरेक्शन पैटर्न : सिबांगोर जुलू गांव की एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल क्राइसिस एंड रिस्क कम्युनिकेशन रिसर्च, 7(2), 186.

नोएस्टर, सी., और ब्योर्क, सी. (2025). यूएस यूथ स्पोर्ट्स पार्टिसिपेशनः जेनरेशन, लैंगिक, रेसध्एथनिसिटी, सामाजिक–आर्थिक स्टेटस, और फैमिली और कम्युनिटी स्पोर्ट कल्चर के प्रभाव का एनालिसिस। लीजरध्लोइसिर, 49(4), 797–843.

पिएना, सी. के., मोले, एम. एन., और लुगिनाह, आई. (2025). सेमी–एरिड उत्तरी घाना में बच्चों की डाइट में विविधता लाने के लिए बच्चों की न्यूट्रिशन काउंसलिंग, लैंगिक डायनामिक्स और घर के अंदर खाने के फैसले लेने की भूमिका। एपेटाइट, 204, 107755.

फू, एल., मेई, बी., वू, वाई., लियू, जी., और मा, जेड. (2025). एशिया में ग्रामीण दिव्यांग बच्चों और उनके परिवारों की नॉन–मेडिकल रुकावटें और जरूरतेंरू एक स्कोपिंग रिव्यू। चाइल्ड एंड फैमिली सामाजिक वर्क, 30(2), 91–108.

यांग, एच., हान, आर., और वांग, जेड. (2023). चीन में 20–34 साल की महिलाओं में तीसरे बच्चे की फर्टिलिटी का इरादा और इसके सामाजिक–आर्थिक फैक्टर. बीएमसी सार्वजनिक हेल्थ, 23(1), 821.

यार, एफ. जी. एम., और जाजिया, जे. जी. (2024). अफगानिस्तान में ग्रामीण विकास की रुकावटें और चुनौतिया : समस्याओं और समाधानों की जाँच। जर्नल लोकस पेनेलिटिअन डान पेंगाबडियन, 3(9), 787–796.

यार, एफ. जी. एम., और यासौरी, एम. (2024). ग्रामीण विकास की चुनौतियाँ और रुकावटों को दूर करने के प्रभावदार उपाय। झोंगगुओ कुआंगये दक्स्यू जुएबाओ, 29(3), 79–90.

रहमान, एम. आई., आलम, जे., खानोम, के., और इमदाद, एफ. बी. (2025). बांग्लादेश में महिला परिवार केयरगिवर्स के बीच इंटरनेट–आधारित सेवा

अपनाने को प्रभावित करने वाले सामाजिक निर्धारक : एक सामाजिक–जनसांख्यिकीय और तकनीकी विश्लेषण। स्वास्थ्य विज्ञान रिपोर्ट्स, 8(4), ई 70665।

राम, एम., निजामानी, बी., और मुहम्मद, ए. एफ. (2025). पाकिस्तान और फिलीपींस में गांव से शहर की ओर माइग्रेशन और महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सक्षमताकरण का संदर्भय एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा। असस वा तंधिम : जर्नल हुकुम, पेंडिडिकन डैन सामाजिक केगामान, 4(1), 1–14।

रामले, एन. एल. बी., और मर्दिकानिंगसिह, आर. (2024). ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनानारू परिवार की आर्थिक भलाई के लिए शिक्षा और उद्यमिता में आने वाली रुकावटों को दूर करना। अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ सेवा विज्ञान, प्रबंधन, इंजीनियरिंग, और प्रौद्योगिकी, 5(1), 27–30।

वाडेई, बी., फ्रेडुआ एंटोह, ई., एडिसन, एम., और येबोआ, टी. (2025). ग्रामीण और शहरी घाना में लैंगिक समानता प्रक्रिया में आने वाली रुकावटों का एक अवलोकन : एक तुलनात्मक विश्लेषण। एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन जर्नल, 60(6), 3654–3669।

वादेई, बी., वादेई, के. ए., और बोनुएडी, आई. (2025). महिलाओं के काम और घरेलू क्षमता के डायनेमिक्स के बीच संबंधों की फिर से जांच : ग्रामीण और शहरी घाना से मिली जानकारी। मानव भूगोल, 19427786251333094।

शुक्ला, पी., कुमारी, ए., लाल, एस. पी., और सुष्मिता, के. (2025). खेती–बाड़ी के विभिन्न कार्यों में खेतिहर महिलाओं के बीच फैसले लेने के प्रेरक : अग्रिम–चरण लॉजिस्टिक रिग्रेशन मॉडल तकनीक। भारतीय शोध पत्रिका विस्तार शिक्षा, 25, 18–23।